अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

हिंदी विभाग

दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

22-23 अगस्त, 2024

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा भारतीय ज्ञान परम्परा"

National Education Policy-2020 And Indian Knowledge System

(वर्ष 2000 में नैक द्वारा पाँच सितारों से प्रत्यायित तथा वर्ष 2016 में 'ए' ग्रेड़ से पुनर्प्रत्यायित)

(Accredited with 5 Stars in 2000& Re-accredited with 'A' Grade in 2016 by NAAC)

'2018 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा ग्रेडेड स्वायत्तता प्राप्त भारत के पाँच केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में से एक' और दक्षिण भारत के दो केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में से एक'

'one of the five central universities in India to receive graded autonomy from the UGC in 2018' & 'one of the two Central Universities in South India to have been granted Graded Autonomy by the UGC'

आयोजक

हिन्दी विभाग

अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय

हैदराबाद-500 007, तेलंगाना राज्य, भारत

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

मन्यवर महोदय/महोदया,

अत्यंत प्रसन्नता के साथ सूचित किया जाता है कि हिंदी विभाग, अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद के तत्वावधान में दिनांक 22-23 अगस्त 2024 को **"राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा भारतीय ज्ञान परम्परा"** विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। अतः सभी इच्छुक प्रतिभागियों से अनुरोध है कि इस संगोष्ठी में अधिक संख्या में सम्मिलित होकर लाभान्वित हों।

विश्वविद्यालय के विषय में:-

देश के ज्ञान की आत्मा विश्वविद्यालयों में बसती है। ज्ञान के सही विकास से ही व्यक्ति के जीवन में किसी भी विचार को जानने-समझने के व्यवस्थित क्रम का आरम्भ होता है। किसी भी विश्वविद्यालय की सम्पूर्णता वहाँ पढ़ाए जाने वाले विषयों एवं वहाँ के सकारात्मक और सर्जनात्मक अकादमिक वातावरण पर निर्भर करती है। भारत जैसे विविधताधर्मी देश के विश्वविद्यालयों के लिए यह अपरिहार्य है कि वहाँ विषयों की विविधता के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक सम्पूर्णता को सामुदायिक भावना के साथ प्रेषित करें। अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय की स्थापना 1958 में केंद्रीय अंग्रेज़ी संस्थान(CIE) के रूप में भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के कर कमलों द्वारा की गई थी।वर्ष 1972 में इसका नाम बदल कर केंद्रीय अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा संस्थान (CIEFL) के रुप में विस्तारित किया गया। केंद्र ने अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा संस्थान के उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा इस संस्थान को 1973 में डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया था। अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा संस्थान की उपलब्धियों और सेवाओं ने भारत सरकार को इतना प्रभावित किया कि भारत में इसकी सेवाओं को प्रभावी ढंग से विस्तारित करने के लिए शिलांग (1973) तथा लखनऊ (1979) में दो क्षेत्रीय परिसरों की स्थापना की गई, जिससे इसकी सेवाओं को सारे भारतवर्ष में विस्तारित करने में सहायता मिली। अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (विगत में अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा का केंद्रीय संस्थान) को संसद के एक अधिनियम द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया और यह विश्वविद्यालय 3 अगस्त, 2007 को अस्तित्व में आया। जिसे अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (EFLU) नाम दिया गया।

किसी भी देश के विश्वविद्यालय अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के केन्द्र होते हैं। उस देश में परंपरा और इतिहास से प्राप्त 'ज्ञानराशि' को अक्षुण्ण रखने का सशक्त और असरदार माध्यम होता है। वर्षों से हमारे पूर्वजों ने देश की बौध्दिक समृद्धि के लिए इसी माध्यम को अपनाया, इसे जाँचा-परखा। आज जिस समय और समाज में हम रह रहे हैं यह समय भले ही आर्थिक समृद्धि के वर्चस्व का है, पर बौद्धिक समृद्धि के बिना आर्थिक समृद्धि की सकारात्मक सर्जनात्मक दिशा संभव नहीं। जो किसी देश या समाज को आधुनिक बनाने की दिशा में सहायक हों। हमारे पूर्वजों के कंठ से यह कहावत यूँ ही निर्मित नहीं हुई । "पूत सपूत तो क्यों धन संचय, पूत कपूत तो क्यों धन संचय ।" इसी बौद्धिक समृद्धि को पिछले 60 वर्षों से अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद, खाद- पानी प्रदान करने की दिशा में अग्रसर है।

यह दक्षिण एशिया का अनोखा एवं एकमात्र ऐसा बहु-परिसरीय मानविकी विश्वविद्यालय है जो भाषाओं के अध्ययन के लिए समर्पित है। इसका लक्ष्य शिक्षक-शिक्षण, साहित्य, दर्शनशास्त्र, भाषा-विज्ञान, संचार, अंतर

अनुशासनिक विषयी-अध्ययन और सांस्कृतिक-अध्ययन के क्षेत्र में अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषाओं में उन्नत प्रशिक्षण तथा अनुसंधान को बढावा देना है।इस विश्वविद्यालय में सात संकाय (Schools) और छब्बीस विभाग हैं जिस में अंग्रेज़ी, हिन्दी एवं ग्यारह विदेशी भाषाओं के माध्यम से मानविकी विषय के विभिन्न कार्यक्रमों का अध्ययन-अध्यापन होता है।

हिन्दी विभाग : संक्षिप्त परिचय

अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की स्थापना वर्ष 2009 में हुई। यह विभाग हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विस्तार के लिए प्रतिबद्ध है। और साथ ही हिन्दी साहित्य की अकादमिक दुनिया में अपनी पहचान को सुनिश्चित कर रहा है। यह विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के द्वारा हिन्दी में शोध के विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन के लिए अर्धवार्षिक मूल्यांकित शोध पत्रिका 'समुच्चय' का प्रकाशन करता है जो हिन्दी भाषा के विकास और प्रसार को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। विभाग द्वारा एम.ए. और पीएच.डी. स्तर के कार्यक्रम (प्रोग्राम/कोर्स) चलाए जाते हैं व बी.ए. स्तर पर वैकल्पिक (आधुनिक भारतीय भाषा सम्प्रेषण Modern Indian Language Communication-MIL) रूप में हिन्दी पढ़ाई जाती है। विगत वर्षों में इस विभाग में अध्ययन कार्य संपन्न कर कई छात्र देश के अन्य क्षेत्रों में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। इस विभाग से कई छात्र पीएचडी उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। साथ ही स्लेट, नेट, जेआरएफ (SLET, NET, JRF) की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की बौद्धिक समझदारी विकसित करने के लिए हिंदी विभाग द्वारा अनेक अकादमिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है। विगत कई वर्षों में विभाग ने भाषा, साहित्य एवं संस्कृति से संबंधित विषयों पर देश-विदेश के जाने-माने प्रतिष्ठित विषय-विशेषज्ञों को समय-समय पर आमंत्रित कर राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, वेबिनार जैसे अकादमिक श्रृंखलाबद्ध व्याख्यानों के आयोजन किये गए है।

इसी क्रम में हिंदी विभाग के द्वारा **“राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा भारतीय ज्ञान परम्परा”** विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आप सभी विद्वानों की उपस्थिति एवं सहयोग प्रार्थनीय है। भविष्य में भी हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के विभिन्न आयामों के विस्तार व विकास के लिए विभाग संकल्पबद्ध है। जिसमें आप सभी सुधी विद्वानों, अध्येताओं से सहयोग तथा सहभागिता की विनम्र अपेक्षा है।

संगोष्ठी का उद्देश्य:

किसी भी सभ्य समाज की पहचान उस समाज के साहित्यिक सांस्कृतिक संस्कार, समन्वयता एवं न्याय प्रणाली से मिलकर बनती है। भारत की पहचान भी इन सबसे मिलकर ही खड़ी होती है। भारत की शिक्षा, संस्कार, अध्ययन प्रणाली एवं ज्ञान परंपरा एवं उच्च मूल्य बोध ने ही भारत को ‘विश्वगुरू होने की प्रतिष्ठा दिलायी है किंतु बदलते समय की आवश्यकताओं को देखते हुए समय-समय पर ज्ञान एवं शिक्षा प्रणाली में उचित और उपयोगी संशोधन करना भी राष्ट्र का दायित्व होता है। भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गयी। इस नीति की परिकल्पना और विस्तार एक नये भारत की निर्मिती के प्रति आश्वास्ति प्रदान करता है। मातृभाषाओं की उपयोगिता से लेकर शिक्षण और कौशल के विविध विचारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति बहुभाषिकता

से लेकर तकनीकी विकास तक के विजन को नये दृष्टिकोण से देखने का प्रयास है। आगे चलकर यह प्रयास कितना सार्थक एवं सफल होता है या किस प्रकार से इसे सफल बनाया जा सकता है, यह विचार-विमर्श का विषय है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से ही भारतीय ज्ञान परंपरा की तरफ भी ध्यान जाता है। भारतीय ज्ञान परम्परा एवं प्रणाली से नयी/भावी पीढ़ी को अवगत कराना केवल एक प्रक्रिया ही नहीं बल्कि दायित्व भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं प्रणालियों को समझने के लिए प्राचीन भारतीय कला, साहित्य, संस्कृति, सिद्धांतो को समझना अत्यंत अनिवार्य है। भारतीय ज्ञान परम्परा को समझने और उसे व्याख्यायित करने के लिए राष्ट्र की देशज अवधारणाओं एवं अनुभूतियों को समझना होगा। लोक से शास्त्र और शास्त्र से लोक की ओर दो तरफ पथ निर्माण करना होगा। ज्ञान परंपरा में विस्मृत कर दी गयी प्राचीन परंपराओं को पुनः विचार विमर्श के केंद्र में लाना होगा। स्त्री, दलित, आदिवासी, लोक परंपरा, लोकाख्यान एवं लोकाभिव्यक्तियों से भावी पीढ़ी को परिचित कराने के शैक्षणिक मार्ग ढूँढने होंगे। इन बिंदुओं पर विचार-विमर्श हेतु ही इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की परिकल्पना की गई है। संगोष्ठी में प्रपत्र वाचन एवं शोधालेखों के माध्यम से विचार-विमर्श हेतु निम्न लिखित उपविषयों पर विद्वतापरक वैचारिक लेख आमंत्रित हैं।

सम्मेलन में शोध प्रपत्र हेतु कुछ विचारणीय बिंदु/उपविषय:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बड़े बदलाव।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं का सशक्तिकरण।
- बौद्धिक ज्ञान रचनात्मक और समालोचनात्मक चिंतन को विकसित करना।
- भाषा व साहित्य के क्षेत्र में रोजगार की संभावना।
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाएं और हिंदी।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हिंदी भाषा की भूमिका।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा का विकास।
- साहित्यिक, तकनीकी अध्ययन एवं प्रशिक्षण।
- राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच की महत्ता।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मीडिया एवं अन्य क्षेत्रों में रोजगार के विविध आयाम।
- सृजनात्मक नवाचार में शोध अनुसंधान।
- मातृभाषाओं की प्रासंगिकता।
- भारतीय ज्ञान परंपरा: अवलोकन।
- भारतीय ज्ञान परंपरा का डिकॉलोनाइजेशन।
- भारतीय ज्ञान परंपरा में वैविध्य।
- भारतीय ज्ञान परंपरा में भक्ति आंदोलन का महत्व।
- भारतीय ज्ञान परंपरा कल, आज और कल।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और साहित्य।

- भारतीय ज्ञान परंपरा और समाज।
- भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान और विज्ञान।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति।
- वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव।

प्रपत्र प्रकाशन संबंधी विवरण एवं निर्देश:

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने हेतु इच्छुक प्रतिभागियों से अनुरोध है कि उपर्युक्त मुख्य विषय एवं उपविषय/विचारणीय बिंदु पर अपना संगोष्ठी प्रपत्र पूरे परिचय के साथ (पता, मोबाइल नबंर, ई-मेल आईडी इत्यादि) दिनांक: 10 अगस्त, 2024 तक nationalseminarheflu2024@gmail.com मेल आईडी पर लगभग 1500 से 2000 शब्दों की सीमा में केवल कृतिदेव या यूनिक कोड, वर्ड फाइल या पेजमेकर(PageMaker 7.0) फाइल में प्रेषित करने का कष्ट करें। विलंब से प्राप्त आलेख एवं प्रविष्टियाँ विचारणीय नहीं होगी। चयनित प्रपत्र विभागीय पीयर रिव्युड पत्रिका 'समुच्चय' में प्रकाशित किए जाऐंगे।

- शोधालेख पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित होने चाहिए।
- शोधालेख में वर्तनी और व्याकरण का गंभीरता से अनुपालन हो।
- वाड्मय चौर्य (Plagiarism) संहिता का पालन हो।
- आरंभ में लेखक का नाम, पद, कॉलेज का नाम और पता, ई-मेल दूरभाषा/मोबाईल का उल्लेख हो।
- संदर्भ सूची का अनुपालन हो।

शोध आलेख प्रस्तुत करने हेतु पंजीयन शुल्क:

- प्राध्यापकों के लिए देय राशि 1200/- रुपए मात्र।
- शोधार्थियों के लिए देय राशि 500/- रुपए मात्र।
- विद्यार्थियों के लिए देय राशि 200/- रुपए मात्र।
- इच्छुक प्रपत्र प्रस्तुतकर्ता पंजीकरण शुल्क का भुगतान निम्नलिखित बैंक खाता संख्या पर कर सकते हैं-

BANK DETAILS:

Account No: 62122901303

Bank Name: State Bank Of India

Branch: EFLU Branch

IFSC Code: SBIN0021106

- सम्मेलन में स्थानीय एवं गैर स्थानीय प्रपत्र वाचकों एवं प्रतिभागियों को अपनी यात्रा-व्यय एवं आवासीय व्यवस्था स्वयं करनी होगी। विश्वविद्यालय इसके लिए उत्तर दायी नहीं होगा।
- प्रपत्र वाचन के लिए पंजीकरण करना अनिवार्य है।

- पंजीकृत प्रतिभागियों को ही प्रमाण-पत्र दिए जाएँगे।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

डॉ. प्रियदर्शिनी, संगोष्ठी संयोजक, दूरभाष : +91 8106894930

नोट: प्रतिभागियों से अनुरोध है कि संगोष्ठी पंजीयन का विवरण (भुगतान की तिथि, नाम, खाताधारक का नाम, इत्यादि का विवरण (स्क्रीनशाट) संलग्न कर के, दिए गए इस मेल आई डी (nationalseminarheflu2024@gmail.com) पर भेजें। ई-मेल में भेजना आनिवार्य है।

IMPORTANT DATES

22-23, August, 2024 — Two Day National Seminar

31 July 2024 — Seminar Registration Last Date

10, August, 2024 — Articles Submission Last Date

nationalseminarheflu2024@gmail.com — Seminar E-mail ID

विनीत

प्रधान संरक्षक

प्रो. सुरभि भारती,

कुलपति (प्रभारी)

अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय

निदेशक एवं विभागाध्यक्ष : प्रो.टी.जे. रेखा रानी, हिन्दी विभाग, ई एफ एल यू

हैदराबाद- 500 007, तेलंगाना (भारत)

संगोष्ठी संयोजक : डॉ. प्रियदर्शिनी

संगोष्ठी सह-संयोजक : प्रो. श्यामराव राठौड़ , डॉ. प्रोमिला, डॉ. मलोबिका

DIGIधन

SBI

Merchant Name : EFLU INTERNAL INCOME

UPI ID : 62122901303@sbi

BHIM BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

G20

भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE